अध्याय 4: पर्वत प्रदेश में पावस

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 13 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर	7 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	कविता का सौंदर्य	3 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1

पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

हल

कवि सुमित्रनंदन पंत ने पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु के निम्नलिखित प्राकृतिक परिवर्तनों का वर्णन किया है—

1. प्रकृति का रूप पल-पल बदलता रहता है: 'पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।'
2. मेखलाकार (करघनी के आकार का) विशाल पर्वत अपने हजारों फूल-रूपी नेत्रों से नीचे जल में अपना विशाल प्रतिबिंब देखता रहता है।
3. पर्वत के चरणों में एक विशाल तालाब दर्पण की भाँति फैला दिखता है।
4. झाग भरे झरने मोती की लड़ियों की तरह झर-झर बहते हुए पर्वत का गौरव-गान करते हैं।
5. पर्वत के हृदय से उठे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष (तरुवर) उच्चाकांक्षाओं से भरकर शांत आकाश की ओर एकटक निहारते हैं।
6. अचानक कोहरे/बादलों के कारण पहाड़ गायब हो जाते हैं — मानो वे पारद (पारे) के पंख फड़फड़ाकर उड़ गए हों।
7. केवल झरनों की आवाज शेष रह जाती है, ऐसा लगता है जैसे आकाश धरती पर टूट पड़ा हो।
8. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँस गए प्रतीत होते हैं।
9. तालाब में धुआँ उठता दिखता है — मानो वह जल गया हो।
10. इंद्र बादल-रूपी विमान में घूम-घूमकर इंद्रजाल (जादू) खेलते हैं।

उत्तर: पावस ऋतु में पर्वत-प्रदेश में प्रकृति पल-पल रूप बदलती है — झरने बहते हैं, तालाब दर्पण-सा दिखता है, वृक्ष आकाश को निहारते हैं, बादल छाने पर पहाड़ अदृश्य हो जाते हैं और शाल के पेड़ भयभीत-से लगते हैं।

प्रश्न 2

'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

हल

'मेखलाकार' का अर्थ है — करघनी (कमरबंद / मेखला) के आकार का अर्थात् गोलाकार / वृत्ताकार।

कवि ने पर्वत की ढलानों का वर्णन करने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया है।

पर्वत की श्रृंखलाएँ (पहाड़ की ढाल) गोलाई में फैली रहती हैं, जो किसी करघनी की भाँति लगती हैं।

इस प्रयोग से पर्वत की विशालता और उसके घेरे की गोलाई का सटीक चित्र प्रस्तुत होता है।
साथ ही 'मेखलाकार पर्वत अपार' — यह पद पर्वत की अनंत विशालता को दर्शाता है।

उत्तर: 'मेखलाकार' का अर्थ है — करधनी/कमरबंद के आकार का (गोलाकार)। पर्वत की गोलाई में फैली ढलानें करधनी जैसी लगती हैं, इसलिए कवि ने इस शब्द का प्रयोग पर्वत की विशाल और वृत्ताकार संरचना को दर्शाने के लिए किया।

प्रश्न 3

'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

हल

'सहस्र' का अर्थ है — हजार (बहुत अधिक)।
'दृग' का अर्थ है — आँख।
'सुमन' का अर्थ है — फूल।
इस प्रकार 'सहस्र दृग-सुमन' का अर्थ है — हजारों फूल-रूपी नेत्र (आँखें)।
पर्वत पर असंख्य फूल खिले होते हैं। कवि ने इन फूलों को पर्वत की आँखों के रूप में कल्पित किया है।
अर्थात् कवि ने पर्वत को एक विशाल जीव की भाँति चित्रित किया है जिसकी हजारों आँखें (फूल) हैं।
इन्हीं आँखों से पर्वत नीचे तालाब में अपना प्रतिबिंब (महाकार) निहारता है।
यह 'मानवीकरण अलंकार' का सुंदर उदाहरण है।

उत्तर: 'सहस्र दृग-सुमन' से तात्पर्य है — पर्वत पर खिले हजारों फूल जो उसकी आँखों के समान हैं। कवि ने इस पद का प्रयोग पर्वत के लिए किया — मानवीकरण अलंकार द्वारा पर्वत को एक जीवंत प्राणी बताया जो इन्हीं फूल-रूपी आँखों से नीचे जल में अपना विशाल प्रतिबिंब देखता है।

प्रश्न 4

कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

हल

कवि ने तालाब की समानता दर्पण (आईने) के साथ दिखाई है।
काव्य-पंक्ति है — 'दर्पण-सा फैला है विशाल!'
कारण — पावस ऋतु में तालाब का जल शांत और स्थिर रहता है।
इस स्थिर जल में पर्वत का विशाल प्रतिबिंब ठीक उसी प्रकार दिखाई देता है जैसे दर्पण में प्रतिबिंब दिखता है।
तालाब का विस्तार और उसकी चमकदार सतह उसे दर्पण जैसी बनाती है।
इस तुलना से पर्वत और उसके जल-स्रोत दोनों की सुंदरता एक साथ उभरती है।

उत्तर: कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है। पावस ऋतु में तालाब का शांत और स्थिर जल ठीक दर्पण की भाँति पर्वत के विशाल प्रतिबिंब को दर्शाता है, इसलिए यह उपमा दी गई है।

प्रश्न 5

पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

हल

पर्वत के हृदय (मध्य भाग) से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष (तरुवर) शांत नीले आकाश की ओर एकटक और अटल भाव से देख रहे थे।

काव्य-पंक्तियाँ हैं —

'गिरिवर के उर से उठ-उठ कर / उच्चाकांक्षाओं से तरुवर / हैं झाँक रहे नीरव नभ पर / अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।'

वृक्ष इसलिए आकाश की ओर देख रहे हैं क्योंकि वे ऊँचाई की ओर बढ़ने की स्वाभाविक प्रवृत्ति रखते हैं।

ये वृक्ष उन मनुष्यों को प्रतिबिंबित करते हैं जो ऊँची-से-ऊँची उच्चाकांक्षाएँ (महत्त्वाकांक्षाएँ) रखते हैं और अपने लक्ष्य की ओर एकाग्रचित्त (अनिमेष, अटल) होकर देखते रहते हैं।

यह पद मनुष्य की उस भावना को भी व्यक्त करता है जो निरंतर ऊपर उठना चाहती है और जीवन के उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित रखती है।

उत्तर: ऊँचे-ऊँचे वृक्ष उच्चाकांक्षाओं से भरकर एकटक आकाश की ओर देख रहे थे। ये वृक्ष उन महत्त्वाकांक्षी मनुष्यों को प्रतिबिंबित करते हैं जो अपने लक्ष्य की ओर अटल और एकाग्र रहते हैं।

प्रश्न 6

शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

हल

पावस ऋतु में अचानक घना कोहरा/बादल छा जाने से पहाड़ गायब हो गए।

इसके बाद तेज़ बारिश शुरू हुई — ऐसा लगा जैसे आकाश धरती पर टूट पड़ा हो।

काव्य-पंक्ति है — 'धँस गए धरा में सभय शाल!'

'सभय' का अर्थ है — भय के साथ।

जब घनघोर वर्षा होती है और चारों ओर से बादल घिर आते हैं, तो ऊँचे शाल के वृक्ष बादलों में खो जाते हैं।

कवि ने मानवीकरण अलंकार के द्वारा शाल-वृक्षों को ऐसे चित्रित किया है जैसे वे इस भयावह दृश्य से डरकर धरती में धँस गए हों।

वास्तव में बादलों और कोहरे के कारण शाल-वन दिखना बंद हो जाता है — यही उनका 'धरती में धँस जाना' है।

उत्तर: घनघोर वर्षा और बादलों के कारण चारों ओर अंधेरा और भयावह वातावरण बन गया। कवि ने मानवीकरण द्वारा शाल-वृक्षों को भयभीत प्राणियों की भाँति चित्रित किया — बादलों में डूबकर वे मानो धरती में धँस गए।

प्रश्न 7

झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

हल

झरने पर्वत (गिरि) के गौरव का गान कर रहे हैं।

काव्य-पंक्ति है — 'गिरि का गौरव गाकर झर-झर।'

पर्वत से निकलने वाले झरने उसकी महिमा और श्रेष्ठता का बखान करते हुए प्रतीत होते हैं।
बहते हुए झरने की तुलना मोती की लड़ियों (मोतियों की माला) से की गई है।
काव्य-पंक्ति है — 'मोती की लड़ियों-से सुंदर / झरते हैं झाग भरे निर्झर!'
झरने के पानी की सफेद धाराएँ और उनमें उठता हुआ सफेद झाग मोती की लड़ियों जैसा सुंदर और चमकीला लगता है।

उत्तर: झरने पर्वत (गिरि) के गौरव का गान कर रहे हैं। बहते हुए झाग-भरे झरनों की तुलना मोती की लड़ियों से की गई है — उनकी सफेद-चमकदार जलधाराएँ मोतियों की माला जैसी सुंदर लगती हैं।

प्रश्नावली 4.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

है टूट पड़ा भू पर अंबर।

हल

प्रसंग — यह पंक्ति पावस ऋतु में घनघोर वर्षा के दृश्य का वर्णन करती है।
'अंबर' का अर्थ है — आकाश।
'भू' का अर्थ है — धरती।
भाव — वर्षा ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र में इतनी तेज़ और मूसलाधार वर्षा होती है कि ऐसा लगता है जैसे आकाश ही धरती पर टूट पड़ा हो।
बादलों का घना आवरण, तेज़ बौछारें और चारों ओर जलमय वातावरण — यह सब मिलकर आकाश और पृथ्वी के बीच की दूरी को समाप्त कर देते हैं।
यह अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण है जिसमें वर्षा की तीव्रता को बढ़ा-चढ़ाकर व्यक्त किया गया है।

उत्तर: भाव — पावस ऋतु में पर्वत-प्रदेश में इतनी प्रचंड वर्षा होती है कि लगता है आकाश ही धरती पर टूट पड़ा हो। यह अतिशयोक्ति द्वारा वर्षा की अपार तीव्रता को व्यक्त करता है।

प्रश्न 2

—यों जलद-यान में विचर-विचर था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

हल

प्रसंग — ये पंक्तियाँ कविता के अंतिम भाग में हैं जहाँ कवि ने पावस ऋतु की संपूर्ण सुंदरता और रहस्यमयता को इंद्र के जादू के रूप में चित्रित किया है।
'जलद-यान' का अर्थ है — बादल रूपी विमान।
'इंद्रजाल' का अर्थ है — जादूगरी / इंद्र का जादू।
भाव — वर्षा के देवता इंद्र बादल-रूपी विमान में सवार होकर इधर-उधर विचरण करते हुए जादू खेल रहे हैं।
पावस ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र में जो अद्भुत और रहस्यमय परिवर्तन होते हैं — पहाड़ों का अचानक गायब हो जाना, तेज़ बारिश, कोहरा, तालाब का धुआँ उठना — ये सब इंद्र के इंद्रजाल (जादू) के कारण ही होते प्रतीत होते हैं।
यह पंक्ति कविता का उपसंहार है जो संपूर्ण प्राकृतिक परिवर्तनों को इंद्र की माया के रूप में समेटती है।

उत्तर: भाव — वर्षा के देवता इंद्र बादल-रूपी विमान में विचरण करते हुए अपना जादू (इंद्रजाल) खेलते हैं। पावस में होने वाले सारे अद्भुत प्राकृतिक परिवर्तन — पहाड़ों का गायब होना, प्रचंड वर्षा, कोहरा — यही इंद्र की माया है।

प्रश्न 3

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर उच्चाकांक्षाओं से तरुवर हैं झाँक रहे नीरव नभ पर अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

हल

प्रसंग — इन पंक्तियों में कवि ने पर्वत पर उगे ऊँचे-ऊँचे वृक्षों का वर्णन किया है।
'गिरिवर' = पर्वत, 'उर' = हृदय, 'तरुवर' = वृक्ष, 'नीरव नभ' = शांत आकाश, 'अनिमेष' = एकटक (बिना पलक झपकाए), 'अटल' = दृढ़।
भाव — पर्वत के हृदय (मध्य भाग) से उठे हुए ऊँचे-ऊँचे वृक्ष उच्चाकांक्षाओं (ऊपर उठने की तीव्र इच्छाओं) से भरे हुए शांत आकाश की ओर एकटक और अटल भाव से झाँक रहे हैं, मानो कुछ सोच-विचार में डूबे हों।
यह पंक्तियाँ मानवीकरण अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण हैं — वृक्षों को महत्त्वाकांक्षी मनुष्यों की भाँति दर्शाया गया है।
साथ ही यह उस मानव की प्रतीकात्मक छवि है जो जीवन में ऊँचाई पाने की इच्छा रखता है और एकाग्रचित्त होकर अपने लक्ष्य को निहारता है।

उत्तर: भाव — पर्वत के उर (हृदय) से उठे ऊँचे वृक्ष महत्त्वाकांक्षाओं से भरकर शांत नभ को एकटक-अटल भाव से निहार रहे हैं। यह मानवीकरण द्वारा उन महत्त्वाकांक्षी मनुष्यों का प्रतीक है जो अपने लक्ष्य की ओर एकाग्र और दृढ़ रहते हैं।

प्रश्नावली 4.3 — कविता का सौंदर्य

प्रश्न 1

इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

हल

मानवीकरण अलंकार — जहाँ निर्जीव वस्तुओं या प्रकृति के तत्त्वों में मानवीय क्रियाओं और भावनाओं का आरोप किया जाए।

इस कविता में निम्नलिखित स्थलों पर मानवीकरण है —

1. पर्वत का मानवीकरण: 'अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़ / अवलोक रहा है बार-बार / नीचे जल में निज महाकार' — पर्वत को एक मनुष्य की भाँति अपने हजारों फूल-रूपी नेत्रों से अपना प्रतिबिंब देखते हुए दर्शाया गया है।
2. झरनों का मानवीकरण: 'गिरि का गौरव गाकर झर-झर / मद में नस-नस उत्तेजित कर' — झरने मद (उत्साह) में पर्वत का गौरव-गान कर रहे हैं, मानो वे गायक हों।
3. वृक्षों का मानवीकरण: 'उच्चाकांक्षाओं से तरुवर / हैं झाँक रहे नीरव नभ पर / अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर' — वृक्षों को उच्चाकांक्षी मनुष्यों की भाँति चिंतन-मग्न और एकाग्र दर्शाया गया है।
4. पर्वत का उड़ना: 'उड़ गया, अचानक लो, भूधर / फड़का अपार पारद के पर!' — पहाड़ को एक पक्षी की भाँति पारे जैसे पंख फड़फड़ाकर उड़ते हुए दिखाया गया है।
5. शाल का भय: 'धँस गए धरा में सभय शाल!' — शाल-वृक्षों को भयभीत प्राणियों की भाँति धरती में धँसते हुए दर्शाया गया है।

उत्तर: इस कविता में मानवीकरण अलंकार के अनेक उदाहरण हैं — पर्वत का फूलों-रूपी नेत्रों से प्रतिबिंब देखना, झरनों का पर्वत का गौरव-गान करना, वृक्षों का उच्चाकांक्षा से आकाश निहारना, पर्वत का पंख फड़फड़ाकर उड़ जाना और शाल-वृक्षों का भयभीत होकर धरती में धँसना।

प्रश्न 2

आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर करता है— (क) अनेक शब्दों की आवृत्ति पर। (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर। (ग) कविता की संगीतात्मकता पर।

हल

यह एक विचारात्मक प्रश्न है जिसमें कविता के सौंदर्य का स्रोत पहचानना है।

(क) अनेक शब्दों की आवृत्ति — 'झर-झर', 'उठ-उठ कर', 'बार-बार', 'विचर-विचर' जैसे द्विरुक्त पदों से संगीतात्मकता और लय बनती है।

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा — 'दर्पण-सा फैला विशाल ताल', 'मोती की लड़ियों-से झरने', 'पारद के पर', 'जलद-यान' — ये पद आँखों के सामने सजीव चित्र उपस्थित करते हैं।

(ग) कविता की संगीतात्मकता — 'पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश / पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश' जैसी पंक्तियों में 'प' वर्ण की आवृत्ति (अनुप्रास) संगीत की लय उत्पन्न करती है।

वस्तुतः इस कविता का सौंदर्य इन तीनों तत्त्वों के समन्वय पर निर्भर करता है, किंतु विशेष रूप से शब्दों की

चित्रमयी भाषा (ख) इस कविता की विशेषता है क्योंकि पंत जी की कविता में प्रकृति के सजीव चित्र सबसे अधिक प्रभावशाली हैं।

उत्तर: इस कविता का सौंदर्य तीनों तत्त्वों के संयोग पर निर्भर करता है, किंतु विशेष रूप से (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर — 'दर्पण-सा ताल', 'मोती की लड़ियों-से झरने', 'जलद-यान' जैसे पद आँखों के सामने प्रकृति के सजीव चित्र उपस्थित करते हैं।

प्रश्न 3

कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए।

हल

इस कविता में चित्रात्मक शैली के निम्नलिखित प्रमुख स्थल हैं —

1. 'मेखलाकार पर्वत अपार / अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़ / अवलोक रहा है बार-बार / नीचे जल में निज महाकार' — पर्वत का अपने जल-प्रतिबिंब को देखने का सचित्र वर्णन।
2. 'जिसके चरणों में पला ताल / दर्पण-सा फैला है विशाल!' — पर्वत के तल में दर्पण की भाँति फैले विशाल तालाब का चित्र।
3. 'मोती की लड़ियों-से सुंदर / झरते हैं झाग भरे निर्झर!' — मोती की लड़ियों जैसे झाग-भरे झरनों का सुंदर चित्र।
4. 'गिरिवर के उर से उठ-उठ कर / उच्चाकांक्षाओं से तरुवर / हैं झाँक रहे नीरव नभ पर / अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।' — आकाश की ओर ताकते ऊँचे वृक्षों का चित्र।
5. 'उड़ गया, अचानक लो, भूधर / फड़का अपार पारद के पर!' — बादलों में अचानक छिपे पर्वत का पंख फड़फड़ाकर उड़ने का चित्र।
6. 'धँस गए धरा में सभय शाल! / उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!' — भय से धँसते शाल-वृक्षों और धुएँ से उठते तालाब का रहस्यमय चित्र।

उत्तर: कविता में चित्रात्मक स्थल — पर्वत का ताल में प्रतिबिंब देखना, दर्पण-सा विशाल ताल, मोती की लड़ियों जैसे झरने, आकाश निहारते वृक्ष, पारद-पंख फड़फड़ाकर उड़ता पर्वत, और धुएँ से उठता तालाब — ये सभी कवि की चित्रात्मक शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।